कविता की राह

शिक्षक बनने की राह चल कर बनती है

हर चीज़ एक जादू है!

(एक सामूहिक प्रयास)

अंकुर सोसायटी फ़ॉर ऑल्टरनेटिव्स इन एजुकेशन

+

बी.एल.एड, मिरांडा हाउस, दिल्ली यूनिवर्सिटी

संपादन

डॉ. अर्चना कुशवाहा

प्रभात कुमार झा

हर चीज़ एक जादू है!

हर चीज़ एक जादू है!

2017

सलाह : अविनाश मिश्र

संपादन : प्रभात कुमार झा, डॉ.अर्चना कुशवाहा

साझेदारी में

अंकुर सोसायटी फ़ॉर ऑल्टरनेटिव्स इन एजुकेशन

+

बी.एल.एड, मिरांडा हाउस, दिल्ली यूनिवर्सिटी

ये कविताएँ

कहते हैं कि कविता देखने से बनती है और इसलिए एक कवि को ठीक से देखना आना चाहिए. न केवल दृश्य को बल्कि दृश्य के आर-पार भी।

मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं (बी.एल.एड, सेकेंड ईयर) के साथ लगभग तीन-तीन घंटे की तीन कविता कार्यशालाएँ करने के बाद, यह यकीन पुख़्ता होता है कि देखने के अभ्यास से कविता और कविता के अभ्यास से देखना रचनात्मक होता है।

'हर चीज़ एक जादू है' इस बिंदु पर एक शुरुआत हुई और आख़िर तक आते-आते 'देखे हुए' की इतनी काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ सामने आईं कि लगा कोई भी जीवन कविता से मुक्त नहीं है।

चीज़ों का जादू उन्हें ठीक से देखने में है, इस तथ्य को इन कवयित्रियों की कविताएँ बताती हैं।

यहाँ वह यथार्थ व्यक्त हुआ है जो अक्सर दर्ज़ होने से छूटता रहता है। इन कविताओं में एक नई उम्र के कई तनाव हैं। इनमें वे जोख़िम हैं जो एक नई उम्र अपने साथ लाती है, लेकिन जो सही वक़्त पर व्यक्त होने से चूकते रहते हैं।

तमाम रूढ़ियों और बंदिशों का सामना करती यहाँ एक नई स्त्री की उम्र है और एक नई उम्र की स्त्री भी।

इस संदर्भ के साथ देखें तो देख सकते हैं कि कविता को कुछ इस प्रकार की एक विधा के तौर पर भी प्रचारित किया जाता है जो बहुत धैर्य और रियाज़ की माँग करती है। यह सुखद है कि यहाँ प्रस्तुत कविताएँ इस बात को सिरे से ख़ारिज करती हैं। ये सारी कविताएँ एक तय समय-सीमा में और एक मौक़े पर ही मुमकिन हुई हैं। हाँ, इनका इस प्रकार मुमकिन होना यह जरूर ज़ाहिर करता है कि धैर्य और रियाज़ से इन कविताओं की कवयित्रियाँ अपनी अभिव्यक्ति और कहन को और बेहतर कर सकती हैं।

एक प्रसिद्ध कवि ने कविता को एक हैंडमेड चीज़ कहा है। उनके मुताबिक कविता कोई आसमानी चीज़ नहीं है, उसे

भी हमें दी गई बहुत सारी चीज़ों की तरह ही गढ़ना पड़ता है। याद और कल्पना उसके मुख्य तत्व हैं और भाषा उसका मुख्य औजार। यहाँ बेशक कह सकते हैं कि ये कविताएँ गढ़ी हुई हैं— याद और कल्पना के गाढे रंगों से।

आख़िर में यह उम्मीद की जा सकती है कि रियाज़ इन कवयित्रियों को और बेहतर रंग देगा। इनका देखना इन्हें और बड़ा कैनवास देगा और इनकी आगामी कविताओं का फलक इनके वक़्त के साथ और व्यापक होगा।

हर चीज़ एक जादू है

प्रियंका सैनी

कभी सोचा न था कि जीवन का हर पन्ना जादू है

यहाँ हर दिन कुछ नया होता है
यहाँ पुराने दिनों की कुछ यादें भी हैं

बचपन में पूरा दिन खिलौनों के साथ बीतता था
लेकिन अब जब ये सेल्फ़ी का जमाना है
हर चीज़ एक जादू है!

सब जादू है

रिचा दुबे

एग्ज़ाम आते ही नींद का उड़ जाना
जो पूरे साल नहीं पढ़ा उसमें अचानक दिलचस्पी हो जाना
फिर क्वेश्चन-पेपर सामने आते ही जो पता हो उसे भी
भूल जाना
सब जादू है

पापा की डाँट पर घंटों रोना
फिर दोस्तों के साथ में एक पल में हँसने लगना
सब जादू है

बीते पलों को याद करके खिलखिलाना
कुछ लोगों को याद करके
उनसे मिलने की तमन्ना करना
बरसों बाद उनसे मिलकर दुखी हो जाना
सब जादू है

भाई के साथ लड़ाई में मिले जख़्म में
कभी न मिटने वाले दर्द का होना
फिर मम्मी से उसे पिटता देख दर्द का अचानक
खत्म हो जाना
सब जादू है

कल जो नोट की गड्डियाँ लॉकर में रखीं
आज उन्हीं को आग में झोंक कर सुरक्षित महसूस करना
सब जादू है

आज सारा दिन

रेनू

आज सारा दिन बाहर घूमती रही
मानो किसी ने पैरों में टायर लगा दिए हों
रुकने की इजाजत ही नहीं देते

चाहूँ थोड़ा बैठना तो पीछे से आए आवाज़ =
''थकेली इंसान... चल ले चुपचाप''

ये 'थकेला' शब्द न जाने क्यों चलने को कर देता है
मजबूर
हो गई हूँ चूर-चूर
कब यहाँ तो कब वहाँ
ये नन्ही-सी तो जान है
कितना चलाओगे इसे!

बारिश

रेनू

यूँ बारिश का कभी भी चले आना
दिल को खुशी दे जाता है

यूँ दहलीज़ पर बैठ बारिश को जीने का
सुख ही कुछ और है

दरवाज़े के सहारे यूँ बैठे-बैठे मन में ख़्याल आया
मैं तो घर में यूँ बैठकर बारिश का लुत्फ़ ले रही हूँ
लेकिन क्या वेभी इसमें शामिल हैं जिन्हें बारिश की बूंदें
स्पर्श कर रही हैं

यूँ हथेली आगे करके कुछ बूंदें पड़ने से हम खुश हो जाते
हैं
लेकिन क्या वेभी खुश होते है जिन्हें बारिश की बूंदें पूरा
भिगो देती हैं
यूँ सर्दी में बारिश का होना क्या किसी को खुशी देगा!

यूँ एक ख़्याल आया कि जिनके पास बारिश में बचने को
छत नहीं
वे कैसे रहते होंगे इस सर्द मौसम में
उनके कंबलों में कई छेद हैं कैसे रुकती होगी उनसे सर्दी
यूँ जमीन पर सोना सर्दी में रोंगटे खड़े नहीं करता होगा

यूँ मेरे दो मिनट दरवाज़े पर बैठने से हवाओं ने अपना दम
दिखा दिया
मुझे सर्दी लगने लगी
बारिश की बूंदें स्पर्श न करते हुए भी मुझे सर्दी का
अहसास कराती हैं

लेकिन उनका क्या जो रहते हैं हमेशा बारिशों और सर्दियों
के बीच ही

समय और याद

निकिता आहूजा

समय बीत रहा है
पर यादों का सिलसिला खत्म होने का नाम ही नहीं लेता
किसी ने शायद सही कहा है
कि यादें मिठाई के डिब्बे की तरह होती हैं
एक टुकड़ा खाकर डिब्बा रख नहीं पाओगे
समय का यूँ बीतना लाता है भय
कहीं ज़िंदगी व्यर्थ न बीत जाए
कहीं काम अधूरे न रह जाएँ
कहीं देखे सपने नींद में ही न खो जाएँ

यादें इंसान की वह पूंजी हैं
जो उसकी ताकत और कमज़ोरी दोनों बन सकती हैं
उसको बना और बिगाड़ दोनों सकती हैं
मगर यादों के पलों की वह नमी
छीन न ले समय
क्योंकि समय बीत रहा है

यादें

प्रियंका सैनी

मेरी कुछ यादें रंग-बिरंगे फूलों की तरह ताज़ा
और खुशबूदार हैं
इन्हीं यादों को याद किया तो दिन बन गया
खुशी के आँसू बह चले

फिर अचानक से आई
एक ऐसी याद
जो याद नहीं करना चाहती थी मैं
वह याद जब हम अपनों से बिछड़ जाते हैं

दिन बीती रात बीती समय बीता
लेकिन यादें नहीं बीतीं

कुछ यादें होती हैं रसगुल्ले-सी मीठी
और कुछ होती हैं करेले-सी कड़वी

पर यादें तो यादें होती हैं
वे समय के साथ झल्लियों न हो जाए
लेकिन एक गहरे निशान की तरह कभी जाती नहीं

सीमाएँ

रश्मि,

मेरे घरवाले मुझे समझा रहे थे
एक ही बात दिमाग़ में बैठा रहे थे
कि धीमी आवाज़ में बात किया करो
सिर झुका कर चला करो
ढंग के कपड़े पहना करो
शाम से पहले घर लौट आया करो
घर के काम किया करो
लड़कों की बराबरी न किया करो

मेरे घरवाले मुझे समझा रहे थे
लड़की हो अपनी सीमाएँ याद रखा करो

रिश्ता

तमन्ना

आज फिर याद आया वह दिन
जब मैं रोते हुए घर से जा रही थी

याद है मुझे उस दिन मेरे आस-पास सब रो रहे थे
आज पता नहीं क्या होने वाला था!

क्या वो लोग हमें डाँटेंगे
या हमें प्यार करेंगे!
कुछ भी पता ना था

अपनी मंजिल पर पहुँचकर जब मैं अंदर गई
तब मेरे सामने बहुत से मुस्कुराते चेहरे दिखे
वे मुझे प्यार करते
मुझे संभालते
और मेरे साथ हँसते-खेलते

जैसे-जैसे समय बीतता गया
मुझे उस जगह से प्यार हो गया
वहाँ के लोगों की आदत हो गई

आज फिर याद आया
वह आख़िरी दिन भी पहले दिन की तरह ही था
सब रो रहे थे
एक-दूसरे के गले मिल रहे थे

पर यह रोना पहले वाले रोने से कुछ अलग था
पहले हम यहाँ आने पर रो रहे थे
अब यहाँ से जाने पर
ऐसा ही रिश्ता होता है
एक स्कूल का और एक बच्चे का

गुम हुई खिड़की

तमन्ना

एक दिन यों ही गुज़रते हुए
देखी थी मैंने एक खिड़की
झाँकती उस खिड़की से
वे नज़रें मानो मुझे ही देख रही हों

हिचकिचाते हुए मैंने अपने कदम बढ़ाए
उन नज़रों ने भी जाने कितने गम छुपाए
मदद का हाथ बढ़ाते हुए
मैंने अपनी नज़रों में संतुष्टि पाई

अगले पहर न थीं वे नज़रें
न वह खिड़की
न जाने कहाँ गुम हुई वह खिड़की

चिड़िया की ख़्वाहिश

तमन्ना

उस चिड़िया की थी बस इतनी-सी ख़्वाहिश
पर फैलाने थे उसको पर पता न था
कि पर कुतर दिए जाएँगे
बिना सुने उसकी ख़्वाहिश

अभी तो उसने उड़ना सीखा
अभी तो उसने पर फैलाए
पर अभी भी उसे डर है कि कहीं पर कट न जाएँ

ज़रा संभल, ज़रा ठहर, ओ री चिड़िया!
जी ले जितना जीना है, प्यार की पुड़िया!

चाहती थी वह उड़ना
अपनी ज़िंदगी जीना
पर क्या पता था उसको
एक दिन बंधन से था बंधना

रही जो पूरे बचपन आज़ाद नील-गगन में
क्या पता था उसको
एक दिन बंद हो जाएगी पिंजरे में

बंद हुई जो पिंजरे में
न दिखा उसे नील-गगन
रह गई ख़्वाहिश अधूरी
बिना जिए बचपन

एक खिलौने का सफ़र

तमन्ना

जब से है यह खिलौना मार्किट में आया
किसी को इसने सुखी तो किसी को दुखी है बनाया

पहले जब नहीं था यह तब सब रहते थे पास एक दूसरे के
अब यह खिलौना नहीं बन गया है मोह-माया

आजकल पास के लोग हो जाते हैं दूर और दूर के लोग हो जाते हैं और दूर

ये एक ऐसा खिलौना है कि आदमी पास के आदमी से नहीं करता बात
बल्कि दूर बैठे लोगों से रहता है बतियाता

आजकल तो एक नया फेज़ भी है आया
सेल्फ़ी की है यह माया
जहाँ देखो वहाँ सेल्फ़ी खींचने खड़े हो जाते हैं
चाहे हो वह पहाड़, उफ़नती नदी या हो ज्वालामुखी
अपनी जान की परवाह किए बिना चले जाते हैं लोग
सेल्फ़ी के नाम पर अपनी जान गँवाने
इन्हें कोई बताए कि मियां सेल्फ़ी से कीमती ज़िंदगी है
उसे बचा लो क्योंकि सेल्फ़ी के बिना भी ज़िंदगी है

एक और नया ट्रेंड है 'पोकेमोन गो' जिसे कहते हैं
न जाने इस खेल को किसने बनाया
पागलों वाले गेम बनाकर सबकी बुद्धि को खराब कर डाला
टुनटुना उठाया और निकल पड़े
सड़कों पर चूहे, बिल्ली जैसे कार्टून को ढूँढ़ने
कुछ तो ऐसे किस्से भी आए हैं
कि लोग इन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते छतों पर चढ़ गए
गिर गए वहाँ से
दूसरों के घर में घुस गए
पहाड़ों पर चढ़ गए
और न जाने कहाँ-कहाँ चले गए
और फिर कभी नहीं लौटे

सोनम गुप्ता के लिए

अंजली गौतम

सोनम गुप्ता तुम बेवफ़ा नहीं हो
बेवफ़ा तो वह ज़ाहिल है
जिसकी ख़राब मानसिकता ने
कहा है तुम्हें बेवफ़ा

ख़ुद को मनचला कहने की यहाँ प्रथा सुहानी है
शब्दों से इ़ज़्ज़त तार-तार करने की भी प्रथा पुरानी है

सोनम गुप्ता तुम बेवफ़ा नहीं हो

क्या मैं ग़लत हूँ

शालू शर्मा

क्या कुछ ग़लत माँगती हूँ
अगर माँगती हूँ बराबरी इस समाज में

क्या कुछ ग़लत माँगती हूँ
अगर माँगती हूँ अपनी बात कहने का हक़

क्या कुछ ग़लत माँगती हूँ
अगर चाहती हूँ अपने रास्ते ख़ुद तय करना

क्या कुछ ग़लत माँगती हूँ
अगर चाहती हूँ कहना जो था हमेशा से कहना

क्या कुछ ग़लत माँगती हूँ
अगर चाहती हूँ कुछ ऐसा करना जैसा किसी ने कभी किया नहीं

नहीं चाहती कि कोई मुझे ख़ास महसूस करवाए
बस चाहती हूँ कि जो मैं माँगती हूँ उसे कोई ग़लत न ठहराए

मेरी कविता

शालू शर्मा

क्या इतना आसान है
अपने विचारों को कविता में ढालना

बैठी तो थी अपनी ज़िंदगी के कुछ पल
इस पन्ने पर उतारने
पर अब लगता है कि क्या
ये उतनी अच्छी है या मैं नादान हूँ

क्या हँसते-खिलखिलाते यह समय बीत जाएगा
या कोई चमत्कार होगा
और मेरी कविता
शुरुआत से अंत तक एक माहिर राग होगी...

समय

युक्ति सुभानी

समय जीवन का आधार
यादें उसका सहारा

वर्तमान समय में जो बीता
यादों के सहारे बीता

अच्छी यादें कभी हँसी नहीं लातीं
पर बुरी यादें हमेशा रुला जाती हैं

न जाने क्यों हम सब यादें संजोए रखते हैं
बेकार चीज़ों का बोझ उठाए फिरते हैं

कुछ याद करते-करते यूँ ही समय बीत जाएगा
और यह समय भी याद बन जाएगा

कब तक यूँ ही

युक्ति सुभानी

जाते हुए साल की रात फिर एक घटना घटी
फिर एक बार कहा गया कि
क्या कर रही थी लड़की घर से बाहर रात दो बजे

क्यों उन लड़कों पर उंगली नहीं उठाई गई
क्यों उन लड़कों को नहीं कोसा गया

आख़िर कब तक ये समय यूँ ही चलता रहेगा
घड़ियों की सुइयों के साथ दिन भी बदलता है

पर क्यों यहाँ सालों के बाद भी लोगों की सोच
और लड़कियों के दु:ख नहीं बदल रहे

मेरे निशां

प्रज्ञा

बंदिशों में न डालो यूँ पूछकर
कि किस मज़हब के हैं हम

उर्दू से मोहब्बत हुई है हमें
पर बातें अंग्रेजी में करने को मज़बूर हैं
कहीं उंगली न उठ जाए हमारे वजूद पर
इस डर में श्लोक भी बड़ाबड़ा जाते हैं
और दिल की बात समझाने के लिए
हिंदी का सहारा भी लेते हैं

अब क्या ख़बर
कि मंजिल कहाँ है
रास्ते तो सब एक जैसे हैं
जब मन किया तो रुक गए
जब धक्का लगा तो चल पड़े

हमारे पहनावे और चलन से
हमारी कौम का अंदाज़ लगाने वालों
बंदिशों में न डालो यूँ पूछकर
कि किस मज़हब के हैं हम

हम अभी खुद अपने निशां ढूँढ़ने में लगे हैं

बिखरी आवाज़ें

रवनीत कौर अरोड़ा और निकिता आहूजा

कहाँ गया वह बचपन
कहाँ गए मेरे दोस्त
कहाँ गए मेरे खेल-खिलौने
अब बस धूल ही धूल

याद आती है पापा की
याद आती है स्कूल की
याद आती है फूलों की
पर अब बस धूल ही धूल

हर तरफ़ गोलियों की आवाज़
हर तरफ़ मायूसियों का आगाज़
हर तरफ़ बस बदले की आग
बस धूल ही धूल

क्या मिला किसी को हमें यूँ रौंदकर
हमसे हमारा सब कुछ छीनकर
हर जगह तबाही फैलाकर
बस धूल ही धूल उड़ाकर

समय

गुरबीन कौर

बज रहे हैं रात के पौने चार
चढ़ने लगा है हल्का-हल्का बुखार
पड़ रही है कई दिनों से पापा की डाँट करारी
पर फिर भी दिखाई नहीं गई समझदारी
आँखों में है नींद खूब सारी
पर क्या करें असाइनमेंट तो करना है कंपलीट
आख़िर है अपने मार्क्स का सवाल
कैसे न हो हमारा फर्स्ट क्लास
यह सोच लेकर काम शुरू किया था शाम को
उस समय पता ना था कि हम होंगे इन हालात में
अब तो जैसे-तैसे करके ख़त्म करना ही है काम
ताकि बाद में कर सके हम एटलिस्ट थोड़ा-सा आराम
और सिर से उतर जाए ये बोरियत का पहाड़
बट मेय बी नेक्स्ट टाइम से समय में पूरा करूँगी अपना
काम

कविता में कहानी

गुरबीन कौर

कॉलेज से वापस जा रही थी मैं घर
जल्दी-जल्दी पहुँची बस स्टैंड पर
पता नहीं कितनी देर में मिलेगी बस
टाइम लगाएगी ज़्यादा या अभी ही आ जाएगी
पर जैसे ही देखा मैंने आती हुई बस को
दौड़कर उस पर चढ़ी और ढूँढ़ा एक ख़ाली सीट को
बैठी उस पर आराम से
पर कुछ ही देर में आ गई नींद
क्या किया जाए अब हम हैं ही बचपन से आलसी
पता भी नहीं चला कि सो गई मैं कब
वो तो भला हो उन आंटी का जिन्होंने मुझे जगा दिया था तब
जब आने वाला था मेरा स्टॉप
यह पूछकर कि कितनी देर में आएगा यह मधुबन चौक?
मैंने कहा आंटी मैंने तो यहीं उतरना है
थैंक्यू मुझे नींद से जगाने के लिए

अकेले लोग

रिया जैन

यहाँ पर सब अकेले आते हैं
यहाँ पर आकर सब रिश्ते बनाते हैं
बहुत से लोग दोस्त बनाते हैं
पर ज़िंदगी की इस राह पर
पानी में तेल की बूंद की तरह
कुछ लोग अकेले रह जाते हैं

घुलने की कोशिश वे बहुत करते हैं
लेकिन जब वे थककर हार जाते हैं
तब ख़ुद को ही ख़ुद का दोस्त बनाते हैं
फिर वह ख़ुद को यही समझाते हैं
कि ज़िंदगी की दौड़ में वही जीतते हैं
जो इस दौड़ में अकेले भागते हैं

वहीं पर

रिया जैन

मैं भटकती रही
सभी अपनों से दूर
सारी परेशानियों से दूर

मैं मन की शांति की आस में
मंदिरों में जाप जपती रही

पर चौबीस घंटों बाद जब मैं वापस आई
मन की शांति वहीं पर पाई
जिसे मैं कुसूरवार ठहराती रही

व्यापार एक खेल

रिया जैन

छोटे-छोटे हाथों में
लाया वह बड़ा व्यापार
बोला मैं खेलूँगा दीदी
आज व्यापार आपके साथ

सोचा मैंने बच्चा है ये
जल्दी से भगा दूँगी
चला के अपना बड़ा दिमाग़
पाँच मिनट में इसे जिता दूँगी

करी चालाकी थोड़ी मैंने
एग्ज़ाम चल रहे थे मेरे यार
समझ गया वह चालाकी मेरी
कर रही थी जो मैं उसके साथ

आँखें तिरछी करके वह
मेरी तरफ़ देखकर बोला
बच्चा नहीं हूँ, मैं बड़ा हो गया हूँ
समझो न तुम मुझको भोला

समय बचाने का सपना मेरा
हो गया चकनाचूर
खेला पूरा व्यापार मैंने
फिर होकर के मज़बूर

कोरी किताबें

रिया जैन

कोरी हैं किताबें
वे कोरी ही रहेंगी
चाहे कितनी भी स्याही डाल दो उनमें
वे कोरी ही रहेंगी

चाहे डाल दो लाखों रंग संसार के
चाहे डाल दो कितना भी पैसा
चाहे ला दो गुरुनाम के
फिर भी रहेगा सब कुछ वैसा का वैसा

ऐसा नहीं कि हम चाहते नहीं
पर हम कर पाते नहीं
वे आते हैं हमें 'कहकर' पढ़ाने
कह जाते हैं कि हम इसके लायक नहीं

पर फिर भी हम चाहते हैं
इसी चाहत से कलम उठाते हैं
जिस तरह की 'आकृतियाँ' वे बनाते हैं
कुछ अलग पर वैसी ही हम भी बनाते हैं
अंत में होता है बस इतना कि
न हम उन्हें समझ पाते हैं
न वे हमें समझ पाते हैं

आसमान

रिया जैन

नज़रें उठा के जब भी तुझे देखती हूँ मैं
सब भूल जाती हूँ

कैसे तू सबको अपने में समाए
अपने मन में पूरी दुनिया बसाए
किसी गहरी सोच में डूबा
चुपचाप निहारता है सबको

कितने रूप है तेरे
कितने ही रंगों में रहता है तू
दुनिया के लिए चुप है तू
पर मेरे लिए तू हर पल कुछ कहता है

शांत नींद

रिया जैन

एक शांत नींद बहुत ज़रूरी है
एक शांत दिमाग़ के लिए

पूरे दिन की सारी थकान भुलाने के लिए
एक शांत नींद बहुत ज़रूरी है

आज तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ
किसी को तुमने जो कुछ बोला
किसी ने तुमको जो कुछ कहा
उन सभी बातों का सही मुआयना करने के लिए
एक शांत नींद बहुत ज़रूरी है

क्यों खड़े हो तुम उदास से
क्या नाराज़ हो अपने आपसे
नहीं मन है किसी की आवाज़ सुनने का
यह वक़्त है ख़ुद से बात करने का
बीती बातों को ठीक से समझने के लिए
एक शांत नींद बहुत ज़रूरी है

अगर दिल में हो रही है उथल-पुथल
दिमाग़ बार-बार बदल रहा है फ़ैसले
इन्हें थोड़ा समय देने के लिए
एक शांत नहीं बहुत ज़रूरी है

आज दिल

रिया जैन

आज दिल गाने को करता है
कुछ गुनगुनाने को करता है
यूँ ही बह रही है ये हवा
मन गुदगुदाने को करता है

यूँ ही ठंडी हवा के झोंके से
पुरानी यादों की धूल झड़ गई
किताबों में उलझी ये आँखें
खिड़की से बाहर ताकने लग गईं

लगता है जैसे गर्मियाँ अलविदा कह रही हैं
और सर्दियों का आगाज़ कर रही हैं
आज दिल गाने को करता है
कुछ गुनगुनाने को करता है।

एक साथ दो ज़िंदगियाँ

रिया जैन

यहाँ एक साथ दो ज़िंदगियाँ चलती हैं
दोनों ही ज़िंदगियों में हम रहते हैं
हम ही जीते हैं
हम ही मरते हैं

कुछ बिस्तर पर सोते हैं
कुछ सड़क के किनारों पर
पर नहीं ऐसा नहीं है
कि रूप-स्वरूप में कोई भिन्नता है
बस जीने के तरीके भिन्न हैं

किसी के सिर पर हज़ार का पल्लू है
तो किसी के सिर पर बंधा हुआ गमछा है
किसी की कलाइयों में सोने की चूड़ियाँ हैं
तो किसी की कलाइयों में काले धागे

कोई सुबह दस बजे तक भी अलार्म से नहीं जागता
कोई सुबह सूरज के उठने से भी पहले ट्रेन की आवाज़ से
उठ जाता है

लेकिन मैं नहीं मानती कि ये ज़िंदगियाँ अलग हैं
क्योंकि ये ज़िंदगियाँ इंसान ने ही बनाई हैं

इतनी भीड़ में भी

रवनीत कौर अरोड़ा

हर चीज़ एक जादू है
जिससे दुनिया बेकाबू है

तकनीक का खेल तो देखो
लोगों को इसने कैसे बहकाया है
वक़्त नहीं है एक दूजे के लिए
तकनीक ने ऐसा हमें बनाया है

इतनी भीड़ में भी
एक-दूसरे से अलग कराया है

मिटाती तो है ये दूरियाँ
पर तोड़ जाती है नज़दीकियाँ

याद

रवनीत कौर अरोड़ा

इस खिलखिलाते चेहरे के पीछे है एक ग़म
जो शायद समय के साथ हो जाएगा कम

याद आती है मुझे अब भी उसकी
जो था हमारे परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा

जब भी देखूँ घर के उन कोनों को
लगता है जैसे वह यहीं कहीं हो

ढूँढ़ती हूँ सड़कों पर
कि उस जैसा दिख जाए कोई कहीं पर

नहीं, पर ऐसा कभी नहीं होता है
शायद कभी न कभी सबको जाना होता है

भले हमारा था चंद सालों का साथ
पर वे सारे पल थे बहुत ख़ास

जब मौत उसके सिर पर आई
की हमने हर कोशिश उसे बचाने की
पर उसे जाना ही था
इस दुनिया से दूर

दूसरों के लिए होगा वह एक पालतू कुत्ता
पर मेरे शीरो जैसा था न कोई दूजा...

जब-जब

रवनीत कौर अरोड़ा

जब देखूँ इस दुनिया को
जब सुनूँ इन लोगों को
जब पढ़ूँ अख़बारों को

सोचती हूँ बार-बार
कहना चाहती हूँ बार-बार
फिर कुछ रोक लेता है मुझे

क्या यह समाज का ख़ौफ़ है
या है यह मेरा बुज़दिलपन
जो बढ़ाने ही नहीं देता एक कदम

रोज़ हो रहे हैं महिलाओं पर अत्याचार
सहती रहती हैं वे हर बार
बयां नहीं करतीं वे अपना दर्द

अब कहाँ गया वह समाज
कभी न कभी तुम्हें भी है इससे जूझना
तुम भी आख़िर एक लड़की हो
यह याद रखना...

सारे दिन के बाद

निकिता आहूजा

सारा दिन भटकते-भटकते
आया मन देह के पास

पर क्या था यह पूरा सच
या थी एक झूठी आस

तट पर आती लहर जैसे भिगो जाती है
आँसुओं की ऐसी दोस्ती झिंझोड़ जाती है

संसार का यह चलन देख
मन में बैठा बच्चा रोता है
बाहर घूमने पर भी
अंदर अपने को सिकोड़ता है

साथ न दिया जिसने उसका
उसी के साथ दिल को जोड़ता है

एक मेहमान

निकिता आहूजा

बरसती रात में जवाब दे गई उसकी गाड़ी
चलते-चलते कीचड़ में सन गई उसकी साड़ी

एक घर दिखा कुछ अकेला-सा
अंधेरे में एक उम्मीद-सा

रहता था उसमें एक छोटा परिवार
मिल-जुलकर रहना और करना बहुत प्यार

दया आ गई माँ को उस भीगी औरत पर
ओढ़ाया कंबल उसकी कोमल देह पर

कुंडी न थी उस गोदाम के कमरे की
बाहर से बंद कर चली गई माँ कमरे को

सुबह-सवेरे निकल पड़ा परिवार घूमने कहीं
तभी मुझे पता चला था माँ है बीमार कहीं

हर पाँच मिनट में हो जाती थी स्मृति विलुप्त
रह गई भीगी औरत गोदाम में गुप्त

मेरी रूह को झिंझोड़ गई यह कहानी
आनी-जानी न थी ये कोई कहानी

आज फिर

निकिता आहूजा

उनकी हँसी ने अक्सर हँसाया हमें
कभी बुझाया तो कभी संग रुलाया हमें
हम तो सोचते थे उन्हें न है कदर हमारी
पर उनकी हँसी ने आज फिर हँसाया हमें
थी वह परेशान
रोई भी कई बार
पर फिर भी न छोड़ी मेरी बाँह
क्योंकि साथ निभाना है उन्हें
आज फिर हँसाना है उन्हें

जादू

निकिता आहूजा

हर चीज़ एक जादू है
हर कण में जादू है

मेरा यहाँ होना भी जादू है
बरक़त ख़ुदा की
जिससे ही यह जादू है

पत्तों के हरे से पीला हो जाना भी क्या जादू है
मेरा कविता लिख पाना भी यक़ीनन जादू है

नज़रिया धुँआ हो गया है
स्थिति बस गुज़र रही है
चारों तरफ़ बस जादू चल रहा है
हम भी उसके संग उड़ चले
किसी की ज़िंदगी बेहतर बनाने वह चले
यकीनन यह जादू है
हर चीज़ एक जादू है

दुख

निकिता गोंद

आज मैं इस क्लास में बैठ कर ख़ुद को सबसे दूर महसूस करती हूँ
लोग कहते हैं तू इंसान बहुत सुंदर है
पर यारो ज़रा उस लम्हें को जी कर देखो
जब कोई अपना हाथ दिखाकर दूर चले जाने की सोचे
वह वक़्त भी सूना लगत ाहै
वह लम्हा भी बेज़ान हो जाता है

आज वे चले जाएँगे
लेकिन एक आस भी है
कि वे दोबारा लौटकर आएँगे

मेरा पर्स

निकिता गोंद

मेरा पर्स नीले रंग का और छोटा-सा है
इस पर्स की चमक हर किसी को आकर्षित नहीं करती
क्योंकि इस पर्स से मेरी यादें जुड़ी हुई हैं

याद को रंग-रूप से नहीं कुरेदा जा सकता

मैं जब भी कहीं जाती हूँ
यह पर्स हमेशा मेरे साथ रहता है

यह पर्स नहीं मेरे दोस्त की दी हुई याद है

कंपकंपाती ठंड

निकिता गोंद

बहुत ठंडी हवाएँ चल रही हैं
लगता है मानो आज यह रात लोरी सुनाकर सबको सुला देगी
लेकिन झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाली एक माँ
आज अपनी दो साल की बेटी को जगाए रखेगी
क्योंकि सुबह सवेरा देखना है
पड़ोस के काका भी आज दो घूंट पीकर सोएँगे
क्योंकि सवेरा जो देखना है
सवेरे की ठंडी धूप ने दरवाज़ा खटखटाया
और ख़बर मिली कि ताई चल बसी
क्योंकि रात उन्होंने रास्ते पर बिताई थी

यही हाल है मेरे देश का जहाँ लोग जाते हैं
ठंड का लुत्फ़ उठाने मनाली और कश्मीर
लेकिन कुछ लोग रह जाते हैं वहीं
जहाँ धीरे-धीरे रात उन्हें अपने कंबल में छुपा लेती है
और छोड़ जाती है पीछे दुखों का समंदर

उसकी कहानी

निकिता गोंद,

हर कोई इस दुनिया में एक कहानी बुनता है
दोस्ती की कहानी
दुश्मनी की कहानी
और न जाने इस तरह की कितनी कहानी
पर हर कहानी की अपनी ज़िंदगी नहीं होती
ऐसी ज़िंदगी जो समय के साथ बूढ़ी न हो
बल्कि वह बढ़ाए समय की उम्र

एक जादू

शिवानी

किसी जादू की छड़ी को घुमाने का परिणाम
जैसे कोई जादूगर कहीं बैठा है
मुस्कुराता कभी तो कभी बेबस-सा लगता
कहीं भरता रंग तो कहीं फूँकता ज़ान है

हर चीज़ एक जादू है
नज़रें देखती सपाट धरती
कहते लोग होती गोल है

कभी हरी-भरी, कभी बंजर,
कभी बेरंग काँपती-सी है
मैंने सोचा इस नज़ारे को कुछ देर निहार लूँ
तो लगा हाँ, हर चीज़ एक जादू है

नज़रें देखती पंछी पिंजरे में कैद
कहते लोग वे होते आज़ाद हैं
कहीं गुट में, कहीं अकेले,
कहीं बेखौफ़ उड़ते-फिरते से
मैंने सोचा उनकी उड़ानों पर से बेड़ियाँ उतार दूँ
ताकि लगे हाँ हर चीज़ एक जादू है

एक तिनका

शिवानी

उस कहानी की तस्वीर
आज फिर आँखों के सामने आ गई
जिस दिन उस चिड़िया की आँखों में
अजब-सी एक तलाश थी
और था बस एक तिनके का साथ

उड़ती फिर रही थी खुले आसमान में
न जाने रास्ते के या मंज़िल के इंतज़ार में
जानती हूँ मैं बस इतना
कि रात के उस तूफ़ान ने
और उन तेज़ हवाओं ने
छीन लिया था कुछ उसका उससे

अब शुरू होनी थी एक नई कोशिश
फिर से अपना आशियाना संजोने की
उड़ चली वह खुले आसमान में
हवाओं से ही अपने गिले ज़रा फुसफुसाती-सी

नीले-नीले पानी के उस तालाब को पार कर
उसके दूसरे छोर पर एक नए पेड़ पर ठहरी
लगा उसे कुछ अपना
वह पराया था फिर भी

नींव का वह पहला तिनका यूँ रखा उस डाली पर
आख़िर आशियाना एक नया-सा मिल ही गया उसे

बंदिशों के दरमियाँ

शिवानी

एक नन्ही-सी कली खिली
अपनी हँसी की छटा बिखराती
जीती तो कम
जीने की चाह ज़्यादा रखती

क्रूर नज़रों से दूर
करना चाहती थी मनमर्ज़ियाँ
बंदिशों के दरमियाँ

हाथ पक्ड़ पिता का दो कदम चलती
डरता वही पिता जब वह अकेले निकलती
आसमान दिखता तो कम
ज़्यादा देखने की चाह रखती

किसी के सहारे के बिना
बटोरना चाहती खुद अपनी खुशियाँ
उन्हीं बंदिशों के दरमियाँ

दहलीज़

रचना सिंह

उसने जिस फ़र्श को चूमा
दूसरे ही पल वह उसका नहीं रहा

इंतज़ार ही दे अब दवा
कि मर्ज़ में आराम नहीं रहा

दहलीज़ के उस पार
बसा है वह शहर
जो शायद गुनहगार तो नहीं
पर पराया करेगा हर पहर

उस दहलीज़ को लाँघना
इतना आसान नहीं ऐ मासूम
पर तेरी मर्ज़ी किसने पूछी
तुझे तो न था पता और न मालूम

ये दहलीज़ बनाई किसी ने
अपनाने वाले भी थे शामिल
शायद तू जाने या न जाने
इनसे लड़ने को तू है काबिल

दहलीज़ के उस पार
राह धुंधली होगी मगर
उम्मीद का चश्मा लगाकर
आसान होगी तेरी डगर
उभरे हुए उस पत्थर पर
पानी की वह बूंद नज़र आए
जो कभी बारिश का हिस्सा थी
और जब अपनी अस्मिता की कहानी सुनाए

तू वह बूंद बन कर तो देख
क्या डर है तुझे हवा हो जाने का
जहाँ पर तू है खड़ा
वहाँ खौफ़ मौत का नहीं
खौफ़ है जमाने का

तू रुक, फिर चल
फिर रुक कर देख
फ़र्क हैं इन दो मज़हबों में
फ़र्क तुझमें और मुझमें
जब जान जाओ तो बताना ज़रूर
अनुभव के मोतीमाला में पिरोना ज़रूर
उस माला के मोतियों को छूकर देखेंगे हम
जानेंगे, समझेंगे और ग़ौर करेंगे
दुख किसका है ज़्यादा और किसका है कम

नज़रिया

रचना सिंह

मैं देखूँ तो पानी
वह देखे तो दरिया है
बदलता रहेगा यूँ ही
ये तो बस नज़रिया है

मैंने परखा खनक को उसकी
तेरे लिए पायलिया है
कब किसको क्या दिख जाए
ये तो बस नज़रिया है

मैंने समझा पतली सड़कें
उसके लिए वे गलियाँ हैं
चलना है सभी को उनमें
ये तो बस नज़रिया है

अपनी नज़र की परख है बस
समझ बनाने का ज़रिया है
मुझमें तुझमें फ़र्क करे जो
ये तो बस नज़रिया है

वह चीज़

अलीशा निधा

वह चीज़ जो मुस्कान दे जाए
वह चीज़ जो खुशी से भर जाए

वह चीज़ एक जादू है

वह चीज़ जो दिल में हो पर जुबां पर नहीं
वह चीज़ जो दिमाग़ में हो पर दिल में नहीं

वह चीज़ एक जादू है

वह चीज़ जो ज़िंदगी में रंग भर जाए
और इस ज़िंदगी को जादुई कर दे

वह चीज़ एक जादू है

अब मैं

अलीशा निधा

मैं बंद दरवाज़ों को खोलती रही
बंद बेड़ियों को तोड़ती रही
खुले आसमान को चूमती रही

चुप्पी अब मेरी टूट गई
दूसरों की अब मैं सुनती नहीं
जीना अब मैं सीख गई

समय है तो यादें हैं

अलीशा निधा

समय है तो यादें हैं
यादों से ही तो समय है
इस समय से यादें बनेंगी
और ये यादें साथ होंगी

अच्छी यादें जीना सीखाती हैं
बुरी यादें सबक देती हैं

हम यादों से ही हैं

समय कोरा काग़ज़ है
और यादें उस पर बनी तस्वीर

मेरा जवाब

अलीशा निधा

आज आई एक कहानी याद
रुपए माँगने आई एक बच्ची पास
मैंने कहा ये क्यों करती हो
स्कूल क्यों नहीं जाती

स्कूल जाऊँगी तो खाऊँगी क्या?
पूछा उसने यह सवाल
तो मैंने भी दे दिया जवाब
कर ले कुछ काम-काज़
खा, कमाकर पैसे चार
पर तभी हुआ मुझे अहसास
कितना खोखला था मेरा जवाब

याद

मोनिका यादव

हर एक बीता पल याद कहलाता है
सबको कुछ याद दिलाता है
कुछ खट्टा, कुछ मीठा
अहसास कराता है
अच्छे-बुरे में फ़र्क बताता है
चलने से दौड़ना सीखाता है
पर समय के साथ सब बीत जाता है
और हर पल
कभी न कभी
हम सबके लिए
याद बन जाता है...

ऐसे ही रोज़

मनाली गुप्ता

आज सारा दिन बाहर घूमती रही
अपने ही ख़्यालों में खोई हुई
चल तो रही थी रास्तों पर
पर मंज़िल कुछ धुंधलाई हुई
न जाने किस ओर जा रही थी
न जाने क्या खोज रही थी
पर घूमते-घूमते एक बात जानी
कि हर किसी की है एक अलग कहानी
हर कोई रोज़ जूझ रहा है
हर कोई अपनी मंज़िल ढूँढ़ रहा है

कहाँ गई थी सुबह से दिखी नहीं
जैसे ही वह घर पहुँची माँ की फटकार पड़ी
सारा दिन बाहर घूमती रही
क्या हमारी कोई परवाह नहीं

माँ को शांत करते हुए वह बोली
मैं तो सुबह से बैंक की लाइन में खड़ी थी
माँ का गुस्सा उतरा
आया उस पर प्यार
ऐसे ही रोज़ घूमा कर बाहर

वक़्त

आरजू मौनी

वक़्त किसी के रोके न रुका
न रुकेगा
लेकिन जाते-जाते कुछ ऐसी बातें
कुछ ऐसी यादें दे जाएगा
जो किसी के दूर होकर भी पास होने का अहसास होंगी
यह अहसास कभी हँसाएगा तो कभी रुलाएगा
जीवन के हर मोड़ पर एक सीख सिखाएगा
कभी किसी को मज़बूत तो कभी कमज़ोर बनाएगा
चाहे या न चाहे लेकिन फिर भी
वक़्त तो वक़्त है न
इसे न कोई कभी रोक पाया है
न रोक पाएगा

दुनिया जादू है

नैंसी गर्ग

हर चीज़ एक जादू है
एक ख़ास अहसास
एक अधूरी-सी आस
एक धुंध जो है आस-पास
सब बेकाबू है

पेड़ों की छाँव
हवाओं के भाव
वह सूरज की किरण
वह चंदा-मामा की लगन
सब में एक जादू है

मम्मी के प्यार में
पापा की डाँट में
बहन से झगड़े में
भाई से लड़ने में
हर चीज़ में जादू है

साथी के साथ में
सखी के साथ बात में
मेरे खुद के प्यार में
कहीं न कहीं एक जादू है

वह जादू ही तो है
जो हर पल मेरे अहसास में है
मेरे जीवन के सार में है
मेरे अंदाज़ में है
मेरे मन की गहराई में है

ये जादू है किसका
ये जादू है सबका
हर चीज़ एक जादू है
हर चीज़ में जादू है

याद न जाए...

नैंसी गर्ग

वह आख़िरी साल था
इस बात का हमें अहसास था
शोर मचाना, खिल्ली उड़ाना
चारों ओर मस्ती रचाना
कभी तेरी, कभी मेरी
कभी मेरी, कभी तेरी
चलती किसकी ये खुद हमने
न जाना

वे पल थे यादों भरे
यादों में यादें लिए
कभी खाना, कभी चुराना
कभी लड़ना और कभी लड़वाना
इसकी उससे चलाना
उसकी इससे चलाना
टीचर के आते ही
पुतला बन जाना
ये रहता था क्लासेज़ का नज़ारा

फिर चलते हैं अपनी दोस्ती की ओर
दोस्ती कहूँ या कहूँ कुछ और
वे सारे पल हैं याद मुझे
जो बिताए हैं हम सबने साथ
पर कुछ पल तो ऐसे भी हैं
जो इन सबमें हैं सबसे ख़ास
खास से मेरा मतलब
जो हैं मेरे दिल के पास

वे यादें हैं मेरे स्कूल की
वे यादें है मेरे दोस्तों की
वे यादें है उनके साथ बिताए पलों की
वे यादें है उन अच्छे दिनों की

दूर जाना

नैंसी गर्ग

सोचा था मैंने जाऊँगी एक दिन दूर
बड़ा चाव था मुझे जाने का कहीं दूर
घर में न लगता था मन
सिर्फ़ जाना था मुझे दूर
घर में थी बंदिशें
जाने से पहले पूछो
आओगी कब, जाओगी कहाँ?

फिर आया वो दिन
जिसका था मुझे इंतज़ार
जब मैं आ गई बाहर
पहले थी बहुत खुश
कि हुआ सपना साकार

दूर जाना है कितना आसान
सोचता है हर इंसान
दूर से जो लगता है अच्छा
हक़ीक़त में वह नहीं है सच्चा

आज दूर हूँ अपनी मर्ज़ी से
अपनी खुशी से
पर कुछ अधूरा-सा है
शायद जो वहाँ था
वह यहाँ नहीं

कुछ लोग कुछ चीज़ें
जिनकी आदत थी हमें
पर अहसास न था
आज उनकी कीमत है
हमारी यादों में

बस इतना था कहना कि
दूर जाना है न आसान
समझ जा रे तू इंसान

कुछ कहानियाँ

नैंसी गर्ग

एक जगह भरी हुई थी बच्चों से
पर वह कोई परिवार नहीं था
इतनी थी कहानियाँ वहाँ
कि समय का था अभाव

आख़िर क्यों ये कहानियाँ हैं
जिनमें सिर्फ़ दुख और दर्द है
क्या उनका जीवन, जीवन नहीं
या उनको कुछ अधिकार नहीं

बात की जब मैंने उनसे
तो हो गई आँखें नम
पर उनकी आँखों में तो
हमेशा से भरे थे गम

करूँगी मैं जो चाहा है

नैंसी गर्ग

चाहा था जो करूँगी मैं आगे
हुआ न जो पूरा तो क्या है बात
अभी तो पूरा जीवन है मेरे साथ!

कलम को कविता

नैंसी गर्ग

बैठी थी वो मेरे साइड में
कपड़े थे बड़े रंग भरे
हाथों में पहने वह वॉच
व्यस्त थी करने में कुछ काम
मिला था जो उसे उस रोज़
कविता थी उसके मन की आवाज़
खाना था उसका पसंदीदा काज
लिख बैठी जब वह कविता

माँगा मैंने उससे परिणाम
लेकिन आश्चर्य हुआ मुझे यह जान
कि कविता अब बन गई उसकी शान
चाहा था मैंने देखना एक बार
कि क्या था आख़िर उसका परिणाम
लेकिन कर दिया उसने पराया
सिर्फ़ उसने कविता को अपनाया

कर दिया उसने मुझे इंकार
कि नहीं दिखाऊँगी कविता मैं आज
सुन कर ये भर आया मेरा दिल
और कलम को कविता गई मिल